Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities
(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 3, Issue 1, March 2025; Pages 05 – 07
DOI: 10.5281/zenodo.14899304

Original Research Article

शिवाजी महाराज का देशप्रेम: स्वराज्य से आत्मनिर्भरता तक

एस. जे. पाटील

शोधार्थी, एस. आर. टी. एम. विद्यापीठ, नांदेड ४३१६०६ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: sjpatil330@gmail.com

Received: 20 December, 2024 | Accepted: 10 January, 2025 | Published: 13 January, 2025

छत्रपती शिवाजी महाराज भारतीय इतिहास के महान योद्धा, कुशल प्रशासक और राष्ट्रनिर्माता थे। वे न केवल पराक्रमी योद्धा थे, बल्कि उनके हृदय में मातृभूमि के प्रति अपार प्रेम था। उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र और हिंदवी स्वराज की स्थापना के लिए समर्पित कर दिया। उनका जीवन संघर्ष, नीति, कूटनीति, और प्रशासनिक दक्षता का उदाहरण है। यह शोधलेख उनके देशप्रेम, प्रशासनिक कुशलता, युद्धनीति और राष्ट्रनिर्माण में उनके योगदान का विस्तृत विश्लेषण करेगा।

देशप्रेम की प्रेरणा

शिवाजी महाराज को देशप्रेम की भावना बचपन से ही अपनी माता जीजाबाई से मिली। उनकी माता ने उन्हें रामायण, महाभारत और अन्य भारतीय ग्रंथों की कहानियाँ सुनाकर वीरता और स्वाभिमान की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने पुत्र को स्वतंत्रता, स्वाभिमान और धर्म की रक्षा के लिए तैयार किया। इसी कारण उन्होंने जीवनभर मातृभूमि की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

स्वराज्य की स्थापना

शिवाजी महाराज का देशप्रेम उनकी स्वराज्य स्थापना की अवधारणा में स्पष्ट रूप से झलकता है। उन्होंने एक स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना की, जहाँ अन्याय, भेदभाव और शोषण के लिए कोई स्थान नहीं था। उनके अनुसार, स्वराज्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक स्वतंत्रता का भी प्रतीक था।

स्वराज्य की स्थापना के लिए उन्होंने दुर्गों का निर्माण और सुदृढ़ीकरण किया। उनकी दुर्ग-रचना नीति अत्यंत प्रभावशाली थी, जिसमें उन्होंने रणनीतिक स्थलों पर किलों का निर्माण कराया और उन्हें युद्ध के समय आत्मनिर्भर बनाया। उनके स्वराज्य की नींव न्याय, प्रशासनिक दक्षता, और आर्थिक स्थिरता पर आधारित थी।

मुगलों और विदेशी शासकों के विरुद्ध संघर्ष

शिवाजी महाराज ने मुगलों, आदिलशाही, और अन्य विदेशी शासकों के खिलाफ संघर्ष किया। औरंगजेब की साम्राज्यवादी नीतियों के विरुद्ध उन्होंने संगठित प्रतिरोध किया और अपनी युद्धनीति एवं गुरिल्ला युद्ध पद्धति से शत्रुओं को पराजित किया। उनका संघर्ष केवल व्यक्तिगत विजय प्राप्ति के लिए नहीं, बल्कि मातृभूमि की स्वतंत्रता और सम्मान के लिए था।

उनकी गुरिल्ला युद्ध पद्धति (गणिमी कावा) ने उन्हें अजेय बना दिया। वे अत्यंत तेज गति से आक्रमण कर शत्रुओं को चौंका देते थे और फिर सुरक्षित स्थानों पर लौट जाते थे। यह युद्धनीति आधुनिक सैन्य विज्ञान में भी अध्ययन की जाती है।

प्रशासनिक सुधार और आत्मनिर्भरता

शिवाजी महाराज का देशप्रेम केवल युद्ध तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से जनता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने कर प्रणाली को न्यायसंगत बनाया, कृषि को प्रोत्साहन दिया, जल प्रबंधन को सुदृढ़ किया और एक सशक्त नौसेना का गठन किया, जिससे मराठा साम्राज्य की समुद्री शक्ति बढ़ी।

उनकी प्रशासनिक व्यवस्था में आठ मंत्री (अष्टप्रधान) होते थे, जो राज्य के विभिन्न कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करते थे। उन्होंने किसानों पर लगने वाले करों को कम किया और कृषि को बढ़ावा दिया। उनकी अर्थव्यवस्था का आधार स्थानीय उत्पादन और व्यापार था, जिससे मराठा साम्राज्य आत्मनिर्भर बना।

धार्मिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता

शिवाजी महाराज का देशप्रेम किसी संकीर्ण धार्मिक भावना तक सीमित नहीं था। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और उनकी सेना में हिंदू-मुस्लिम सभी धर्मों के लोग थे। उन्होंने कई मस्जिदों और दरगाहों की रक्षा की और कभी किसी धर्म विशेष पर अत्याचार नहीं किया। यह उनकी राष्ट्रीय एकता और सर्वधर्म समभाव की नीति को दर्शाता है।

उन्होंने अफजल खान के विरुद्ध युद्ध में अपनी रणनीतिक बुद्धिमत्ता का परिचय दिया और अपने शत्रुओं को भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की नीति अपनाई। उन्होंने कई मुस्लिम सरदारों को अपने प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया, जिससे उनकी धर्मनिरपेक्ष सोच उजागर होती है।

सांस्कृतिक योगदान और भाषा प्रेम

शिवाजी महाराज ने मराठी भाषा को प्रशासनिक भाषा के रूप में अपनाया, जिससे जनता को अपने शासन से जुड़ने में आसानी हुई। उन्होंने संस्कृत और मराठी साहित्य को प्रोत्साहन दिया और स्थानीय कलाकारों एवं विद्वानों का सम्मान किया।

उन्होंने अपने शासन में मराठी संस्कृति को बढ़ावा दिया और विदेशी प्रभावों से बचाने के लिए स्वदेशी वस्त्र, शिल्प और स्थापत्य कला को प्रोत्साहन दिया। यह उनके राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति उनके गहरे लगाव को दर्शाता है।

निष्कर्ष

छत्रपती शिवाजी महाराज का देशप्रेम केवल युद्धों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह उनकी नीति, प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण में भी परिलक्षित होता है। वे न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि एक सच्चे राष्ट्रनायक भी थे, जिनका जीवन और कार्य आज भी देशभक्ति की प्रेरणा देते हैं। उनका योगदान भारतीय इतिहास में अमिट है और वे सदा-सर्वदा राष्ट्रप्रेम के प्रतीक बने रहेंगे।

शिवाजी महाराज का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा देशप्रेम केवल भावनाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे कर्म और प्रशासनिक कुशलता में भी परिलक्षित होना चाहिए। उनके आदर्श आज भी हमें एक सशक्त, आत्मनिर्भर और न्यायसंगत समाज की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ सूची

१. गजानन मेहेंदळे, "छत्रपति शिवाजी महाराज: एक जीवनगाथा"।

२. जदुनाथ सरकार, "शिवाजी एंड हिज टाइम्स"।

३. सुरेंद्रनाथ सेन, "शिवाजी: हिस्ट्री एंड लिगेसी"।

४. गोविंद सखाराम सरदेसाई, "शिवाजी एंड हिज एडमिनिस्ट्रेशन"।

५. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के लेख और शोधपत्र।

६. विभिन्न मराठी ऐतिहासिक ग्रंथ और पुरालेख।